Vol 4 Issue 9 March 2015

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-9 | March-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

GRT

स्त्री विमर्श आधुनिक संदर्भ में

आरिफ जमादार

शदरचंद्र पवार महाविद्यालय आर्टस कॉमर्स ॲन्ड सायन्स सोलापूर (महाराष्ट्र)

सारांश :- हिंदी साहित्य की छायावादी 'मीरा' का स्त्री चिंतन आज स्त्री विमर्श की बृहता को अभीरंगीत किए जा रही है। भक्ति काल की विरहणी 'मीरा' को केंद्र में रखकर जब महादेवी वर्मा ने अपने विषयानुभूत भाव को आकार प्रदान किया तो वही भविष्य की गति पर भाष्य भी किया है। वें अपने एक अभिभाषण में कहती है– ''मुझे महिलाओं से संबंधित एक विषय पर अपने विचार व्यक्त करने है। विषय एक ओर नवीन दशक में समय की सीमा बांधता है और दूसरी ओर भारतीय समाज में नारी की स्थिति की ओर संकेत कर विषय को सुदूर अतीत तक मुक्त कर देता है। इस प्रकार हमारे लिए वर्तमान की समस्याएं ही नही, अतीत से प्राप्त अपने मूल्यात्मक दाय भाग का परिक्षण भी अनिवार्य हो उठता है।''[1] आज जब इसी अनुषंग को लेकर स्त्री विमर्श के वर्तमान रंग को परखा जाने लगता है– तब स्त्री विमर्श के बहाने छिड़का गया रंग, आज किसी –न–किसी रूप में आस्वाद्यक का नया कलेवर ही बूनता पाया जाता है।

प्रस्तावना

प्रकृति ने मनुष्य को उसकी बौध्दिकता के कारण ही अपना 'नायब' प्रस्तुपित किया है। मनुष्य जब अपनी छाँह तलाशने की पहल कर रहा था, तब प्रकृति अपनी टिमटिमाती ज्योत की रौशनी से उफ्फान में आकर द्दकुछ अंश ही सही मनुष्य को यह बहरने का मौका दे रही थी कि, ऊंगलियों के शिरों पर लगाए गए 'ईत्र' के कुछ छिटें अगर कागज के फूल पर गीर जाए तो, कागज अपनी महक के साथ मूरझाने का डर भी खो जाएगा। जिससे हो सके कागज का लाल गुच्छा ही 'व्हॅलनटाइन ड़े' की पहचान बने।

रहा सवाल भूखे –प्यासे मधुमक्खी का, जो यह नजर लगाए बैठी है कि, अभी काटों से लड़कर फूल खिलेगा जिसे मैं आत्मस्फूर्त कर कुछ मरहम बन पाऊं उस शिद्दत में पड़े 'ज़रा' के लिए । यहाँ अस्सल दिवाणगी काम नही आएगी, जब तक गुड़ का राडा बनाना न सिख ले मधुमक्खी।

आज का समय परहेज का नही, बल्कि जिससे परहेज किया जा रहा है, उसके अस्ल को बया कर परहेज के मरहम ढूँढ निकालने का है। क्या हम जहाँ ''खुब लड़ी मर्दानी वह झाँसी वाली राणी थी''[2] का ताज देते है, तो क्या वहीं

''अहमेव वातइव प्रबाम्यरभमाणा भुवनानि विश्वापरो
परो दीवापर एना पृथ्वीव्यैतावनी महिना सं बभूवप'[3]

अर्थात हे विज्ञ! मै जो कहती हूँ , वह पूर्ण यथार्थ है, मुझे न मानने वाले क्षीणता को प्राप्त होते है, मै देवताओं और मनुष्यों के परम पुरूषार्थ की उपदेशिका हूँ, मेरी कृपा से ही लोग बलवान, मेधावी, स्तोता और कवि बनते है। ''का पथ इशारित नही कर सकते!''

आज स्त्री–विमर्श का एक अहम सवाल है–स्त्री को लेकर उसकी मुक्ति, उसकी अस्मिता तथा उसके जीवन का विकासात्मक अध्ययन। स्त्री विमर्श का मूलादेश अगर पुरूष–व्यवस्था की पृष्ठभूमि है–तो इस व्यवस्था की परिगुंज करने की सही व्याख्या क्या होगी? स्त्री विमर्श की पृष्ठभूमि 'अगर' औरत पैदा नही होती बनाई जाती है' कि विचार धारा है तो फिर एकाधिक निर्मिति की स्थिति क्या होगी? मातृत्व, स्नेह, कोमलता, वात्सल्य, ममत्व और कर्मीयुषत्व के प्राकृतिक गुणों के स्वीकार का क्या होगा? जो, मानव जीवन के लिए अमीयांकृत ज्योत की दोर तो है साथ ही सुगम रौशनी के साथ पीयुषामृत वाणी की पथप्रदर्शक की सलाह भी, इसी को व्यक्त करते हुए अनामिका कहती है, ''विश्वास करने से ही विश्वास का मान रखने का शऊर किशोरों में विकसित हो सकता है। पुलिसिगं तो किसी तरह की अक्षम्य ही है। संवेदनशील मानवीय संबंधो की पुलिसिगं क्या! आंतरिक विवेक जागृत करना ज्यादा जरूरी है, जो विश्वास में लेकर ही अभिभावक शक्तियां विकसित कर सकती है।''[4]

''कौन बूढ़ा दर्जी
अपने मंजे हाथों से
इतनी रफ्तार से

तीखी हवा की सुई
और बिजली के सुनहले धागे से–
फटे मेह के दो टुकडों को सीता है।''[5]

स्त्री की यह बौध्दिक तथा अपने स्व–गर्जत्व की पहचान ही है, जो बनवास के बाद भी अपने से उपजी नई सुबह को उसके–अपने में छिपे बलत्व का एहसास कराके अपने 'अहम' की ध्वनि से सारी धरती को अपने सामने 'नत' होने के लिए मजबूर करते वाली व्यवस्था के खिलाफ अपने कृंदतनाद से सूरज को यह भी सोचने विवश कराती है कि 'तू कितना ही तेज– तर्रार क्यों न हो तुझे उगने का मौका तभी मीलेगा, जब तु आजीजी के साथ सबको सलाम के बाद फज्र की सलामती मांगे।'

वर्तमान स्त्री विमर्श की किसी भी पहलु या समस्या की ओर लम्बी बहस की वीजनता को पल्लवित करने से पहले यह देखना जरूरी है कि पश्चिमी चिंतन का रूप उस पर कितना हावी है। जहाँ भारतीय अवधारणा और परम्परा स्त्री को उसकी गुणवत्ता और श्रेष्ठत्वता के कारण उसे 'जननी' का भूषण प्रदान करती है, और साथ ही प्रकृति की प्रथम नियति का फैसला अगर स्त्रीता की शब्दलहर पर ही आधारित है, तो पश्चिमी सभ्यता की जीनत में यह कहाँ तक सही है कि, टेड़मार्क के एक्सपाइर के बाद भी मूँह के जायके के लिए नही तो ना सही नाक के नाशे में उपयोग में आना?

''धरती की तरह मगर इनका
तय नही है कोई गृहपथ
एक–दुसरे से है
बार–बार टकराती।''[6]

आज के समय का अगर कर्म की प्रथमाध्याय वाणी की ओर ध्यानाकृष्ट कर दिया जाए तो व्यवस्था पर हावी हो रही पुरूषवादीता को समझााकर सामजंस्य का नया अध्याय परीणित किया जा सकता है। यह बात तभी सच्च साबित होगी जब किसी नाबीना के समक्ष दुनिया की रंगो–जीनत को ऐसे पेश करे कि वह नाबीना अपने में एक रंग की रंगी जिन्दगी को सुने हुए अलंकृत शब्दलहारों में तौलने के लिए मजबूर न हो जाए। स्त्री जब कहेगी–

''अहमेव स्वयमिंद वदामि जुष्ट देवेभिरूत मानुषोभि'
यं कामये तं तमुग्र कृणोमि तं ब्रह्माण तमृषि तं सुमेधाम?''[7]

मै जब सृजन कार्य करती हूँ तो मेरी गति वायु के समान होती है। मै अपने महत्वपुर्ण कार्यो से महिमामयी होकर आकाश और पृथ्वी की सीमाओं को भी लाँध्य चुकी हूँ। तब कही जाकर एक से आबाद हुई धरती ता–समय सरो शाब का गुजंन करती देखी जाएगी।–

''कितनी भी हो आधुनिक दुनिया
प्राचीन रहती हैं अभिव्यक्तियाँ
प्यार की, नफरत की।''[8]

इतिहास अगर मनुष्य जीवन के घटनाओं का कालक्रम की दृष्टि से लिखा गया जीवनाध्याय है, तो इस अध्याय में भविष्याधिन मनुष्य के स्मृति का एक पन्ना भी तो होगा। यहाँ जरूरी है, पन्ने के हर वर्ण को परखना क्यों कि, जहाँ 'रोमा' इस व्यक्ति विशेष नाम को 'मारो' इस भविष्य क्रिया में परिवर्तित किया जा सकता है, तो वही सूरज की गुरूबत में धीमि पडी रौशनी को विनम्रता का ऐसा प्रमाण दिया जा सकता है जिससे कल की रौशनी की उम्मीद एक रंग का चष्मा नही बल्कि समनयांक का अंजन लगा ले–

''मुझमें बहुत सारा नाच भरा है–
कम–से–कम तुम जानती हो!
एक अनंत मुझे चाहिए।''[9]

अब समय के बैसाखी ने नारा बस इतना है कि वह सिंफ गीरने से बचा ले। 'यदा–यदा' का नारा जब घडियाल की सीख बन जाएगी तब साथ चलने वाली परछाई भी जीवन रहबरी की पुस्त बयान करने लगेगी। यही कहना है महादेवी वर्मा का कि ''आधुनिकता की वायु में पली स्त्री का यदि स्वार्थ में केन्द्रित विकासित रूप देखना हो– तो हम उसे पश्चिम में देख सकेगें।''10 मानवी फितरत भी बड़ी ही विचित्र है, जब सूरज की तफिस्त से दो–ढाई हजार का जूता घीस कर अपने न होने का एहसास अपने उपर वाले को कराने लगता है, तो हर पैर यह आरजु करने में लग जाता है कि किसी भी थोड़ी थंडी छाँह ही सही उसे मील जाए ताकि अपने न होने को हर वक्त बयान करने से अच्छा है, उस थंड़ी छाँह के साए में अपने साथ अपनों के होने का वह आपसी सामजस्य बयान कर सके ताकि करवट बदलने के बाद भी सूंदर सपने के रूकावट का ड़र न पैदा हो।
दतास्तु!

संदर्भ

1) महादेवी वर्मा – संभाषण – साहित्य भवन प्रा. लि इलाहाबाद. पृ. 84
2) सुभद्रा कुमारी चौहान –झॉसी की रानी
3) ऋग्वेद 10 / 125 / 18
4) अनामिका – मन मांझने की जरूरत – सामायिक प्र., सं. 2008, नई दिल्ली, पृ. 139
5) अनामिका – शीतल स्पर्श एक धूप को– अमिताभ प्र. सं. 1975, मुजफ्फरपुर, पृ. 1
6) अनामिका – कवि ने कहा – किताबघर प्र. सं. 2011, नई दिल्ली पृ. 95

7) ऋग्वेद 10 / 125 / 5
8) अनामिका – खुरदुरी हथेलियाँ – राधाकृष्ण प्र. सं. 2005, नई दिल्ली पृ. 147
9) अनामिका – दूब–धान – भारतीय ज्ञानपीठ सं. 2008, नई दिल्ली पृ. 122
10) महादेवी वर्मा – शृखंला की कडियाँ – राधाकृष्ण प्र., नई दिल्ली पृ. 144

आरिफ जमादार
शदरचंद्र पवार महाविद्यालय आर्टस कॉमर्स ॲन्ड सायन्स सोलापूर (महाराष्ट्र)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org